व्यापक साक्षरता कार्यक्रम के आवश्यक स्तम्भ

सक्तिब्रता सेन और निधि विनायक

साक्षरता के तीन स्तम्भ

मौखिकता, वर्ण विन्यास पद्धति में दक्षता[i] (orthographic expertise) और विभिन्न प्रकार के पाठ्यों से सम्पर्क- यह सब मिलकर बच्चों के लिए एक व्यापक साक्षरता अनुभव का निर्माण करते हैं। इन तीनों स्तम्भों की प्रकृति न तो वृद्धिशील है और न ही कारणात्मक। वे वास्तव में आपस में गुँथे हुए हैं। और यदि शुरुआती पाठक उनका अनुभव एक साथ करें तो इससे उन्हें प्रेरित एवं स्वतंत्र पाठक बनने में मदद मिलती है।

बच्चा, पढ़ना सीखने के लिए जो प्रयास करता है, उसमें भाषा का योगदान बहुत महत्त्वपूर्ण है। भाषा ही अर्थ निर्माण के लिए, दुनिया के बारे में जानने के और जीवन के अनुभवों को समझने के लिए बच्चे का आधार है। चूँकि भाषा बच्चे के लिए सोच-विचार की वस्तु बन जाती है, इसलिए मौखिकता, साक्षरता सीखने की पहली आवश्यकता है।

इसके अलावा हमें भारत की बहुभाषी यथार्थता के बारे में भी पता होना चाहिए और उसे स्वीकार करना चाहिए। हर भारतीय बहुभाषी होता है जिसमें विविध मौखिक अभिव्यक्तियाँ शामिल रहती हैं। अधिकांश बच्चे जैसे-जैसे बड़े होते हैं और साथ ही अपने आस-पास की दुनिया से अन्तःक्रिया करते हैं तो किसी-न-किसी तरह भाषा की अनूठी प्रवाहिता के सम्पर्क में आते हैं। साक्षरता के लिए एक ठोस आधार तैयार करने के लिए कक्षा में बच्चे की भाषा और मौखिकता के लिए स्थान बनाना बहुत ज़रूरी है।

बच्चों को मौखिक भाषा के विकास और लिखने की विशेषज्ञता के प्रति जागरूकता के अवसर देने के साथ-साथ विभिन्न प्रकार के सार्थक पाठ्यों से रू-ब-रू करवाना भी महत्त्वपूर्ण है। अफ़सोस की बात यह है कि बच्चों को साक्षरता का सार्थक अनुभव देने के लिए अकसर किताबों को केवल सोने पर सुहागे के रूप में देखा जाता है यानी 'किताबों का होना अच्छा है' न कि यह कि 'किताबें अपरिहार्य' हैं। गहन एवं विस्तारित समझ बनाने और प्रवाह के विकास के लिए विभिन्न प्रकार के पाठ्यों से रू-ब-रू होना बेहद ज़रूरी है।

कक्षागत प्रक्रियाओं में साक्षरता के तीन स्तम्भ

साक्षरता के इन तीन स्तम्भों के बारे में अच्छी तरह से समझने और कक्षा में उनका प्रयोग करने की ज़रूरत है। ऐसा करने के कुछ तरीक़े यहाँ दिए गए हैं :

प्रभावी मौखिक भाषा अभ्यास

यह बच्चों को गम्भीर रूप से सोचने और जिन मौखिक संसाधनों को बच्चे कक्षा में साथ ले कर आते हैं, उन्हें आधार बना कर नवीन अधिगम के लिए प्रोत्साहित करते हैं; और साथ ही स्थानीय भाषा और स्कूल की भाषा के बीच की दीवार को गिराने में उनकी मदद भी करते हैं।

- कहानी पर चर्चा : बच्चों को कहानी पढ़ने से पहले, पढ़ने के दौरान और पढ़ने के बाद, इन तीनों चरणों में कहानी के साथ जुड़ने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।
- किसी कहानी को पढ़ने से पहले बच्चों को यह बताने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है कि उसमें दिए गए चित्र संकेत, कहानी के शीर्षक आदि के आधार पर वे अनुमान लगाएँ कि कहानी क्या हो सकती है।
- जबकि कहानी पढ़े जाने के दौरान, कुछ दिलचस्प बिन्दुओं पर रुककर उनसे पूछा जा सकता है कि अब आगे क्या होगा। इससे भी काफ़ी मदद मिलती है।
- कहानी पढ़ने के बाद बच्चों से कहानी को अपने शब्दों में सुनाने के लिए कहा जा सकता है। यह सोचने के लिए कहा जा सकता है कि पात्रों को कैसा महसूस हुआ होगा। उनसे कहानी का विस्तार करने, कहानी की किसी घटना को बदलकर उसे फिर से लिखने आदि के लिए कहा जा सकता है। पढ़ने के बाद की जाने वाली इन गतिविधियों को लेखन-कार्य के माध्यम से भी मज़बूत किया जा सकता है।
- चित्रों पर चर्चा : बच्चों को रचनात्मक रूप से सोचने, कहानी रचने, शब्द-भण्डार बढ़ाने और सक्रियता से चर्चाओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, पाठ्यपुस्तकों आदि से चित्र लिए जा सकते हैं। इन चित्रों पर चर्चा के दौरान इस तरह के प्रश्न पूछे जा सकते हैं— आपको क्या लगता है कि यहाँ क्या हो रहा है? यह चरित्र इस गतिविधि को क्यों कर रहा है? आपको क्या लगता है कि वे इसके बाद कहाँ जाएँगे? आपके विचार में यह दोनों किरदार किस बारे में बात कर रहे हैं?

[i]अर्थात शब्दों के रूप में विशिष्ट अक्षरों के पैटर्न की पहचान करने की क्षमता जो अन्ततः शब्द-पहचान की ओर ले जाती है। जब बच्चे लिखने की विशेषज्ञता हासिल करते हैं तब पढ़ना एक स्वचालित प्रक्रिया बन जाती है।

- मुक्त चर्चा : बच्चों को अपने दैनिक जीवन के अनुभवों, अपने भविष्य, अपने विचारों आदि के बारे में बात करना बहुत अच्छा लगता है। इसलिए शिक्षक के लिए यह बात बहुत महत्त्वपूर्ण हो जाती है कि वे बच्चों के साथ चर्चा के अवसरों का उपयोग करें, जिनमें से कुछ चर्चाएँ थीम पर आधारित और कुछ सहज हो सकती हैं। जैसे अपने आस-पास नज़र आने वाले स्थानीय पौधों, पशुओं या उपकरणों पर चर्चा करना या शाम को वे क्या खेलना पसन्द करते हैं और कुछ विशिष्ट व्यंजनों को कैसे तैयार किया जाता है आदि के बारे में बातचीत की जा सकती है।
- चर्चा के दौरान बच्चों को अपनी मातृभाषा में ख़ुद को स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। क्योंकि यह बात महत्त्वपूर्ण है कि वे गम्भीर रूप से सोचना सीखें और अपने विचारों को तार्किक रूप से व्यक्त करें। और यदि अपनी मातृभाषा में बोलने की स्वतंत्रता हो तो उन्हें ख़ुद को व्यक्त करना कहीं अधिक आसान लगता है।

बहुभाषी भारत में साक्षरता : *रूम टू रीड* के अनुभव

रूम टू रीड (RtR) ने राजस्थान के सिरोही और मध्य प्रदेश के बड़वानी ज़िलों में एक भली-भाँति रचित बहुभाषी कार्यक्रम लागू किया है। यह प्रक्रिया दोनों स्थानों के विस्तृत सामाजिक-भाषाई सर्वेक्षण के साथ शुरू हुई, जिसके बाद निष्कर्षों का विश्लेषण किया गया ताकि उसकी रोशनी में फ़ील्ड के कार्य किए जा सकें।

वैसे तो साक्षरता के तीन व्यापक स्तम्भ कार्यक्रम की आधारशिला थे, लेकिन बहुभाषी सामग्री के निर्माण और संसाधन के रूप में बच्चे की भाषा के उपयोग पर अतिरिक्त ध्यान दिया गया था। इस बात के लिए सावधानीपूर्वक और सचेत क़दम उठाए गए कि किसी एक प्रकार की भाषा को दबाया न जाए, हालाँकि स्कूली व्यवस्था एक प्रमुख भाषा को स्थान देती थी। स्थानीय भाषा में कहानियाँ लिखी गईं, शब्द-सूची और शब्द चित्र-कार्ड बनाए गए, ध्वनि सम्बन्धी जागरूकता की गतिविधियों के लिए स्थानीय शब्दों का प्रयोग किया गया और शिक्षक व विद्यार्थी दोनों को मौखिक या पाठ-आधारित गतिविधियों से सम्बन्धित चर्चाओं में अधिकाधिक भागीदारी के लिए स्थानीय भाषा का प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। बच्चों के विविध भाषाई अनुभवों का उपयोग साक्षरता कक्षा के एक आवश्यक घटक के रूप में किया गया था।

अल्फा सिलेबरीज़ (alfa syllabaries) या आबूगीदा में ध्वनि-प्रतीक इकाइयों का सम्बन्ध कमोबेश सुसंगत है। उदाहरण के लिए, देवनागरी लिपि में सभी शब्दों में 'क' अक्षर की ध्वनि हमेशा /क/ होगी, जैसे कमल, चकमा, महक आदि। लेकिन अँग्रेज़ी में ऐसा नहीं है, इसमें 't' अक्षर की ध्वनि एक ही शब्द में भी अलग हो सकती है, जैसे 'station' आदि।

किन्तु इसका यह मतलब नहीं है कि अक्षरों को सिखाना आसान है। हालाँकि अक्षरों का भाषाओं में एक पैटर्न है लेकिन उसमें 400 से अधिक संयोजन हैं और बच्चों को इन्हें लगभग तुरन्त ही डीकोड (decode) करना पड़ता है, साथ ही, विभिन्न सन्दर्भों में दृश्य-प्रतीक बदलता है। उदाहरण के लिए 'ई' को ईख में एक अक्षर की तरह और 'की' में स्वर के रूप में प्रयुक्त किया जाता है; अक्षर 'त' बदलकर 'त्य' या 'स्त्री' के रूप में भी लिखा जाता है। इससे हमारे कक्षा-अभ्यास के लिए भी यह समझ बनती है :

- केवल पूरी इकाइयों को पढ़ाने से कोई फ़ायदा नहीं होता। अक्षरों के शिक्षण को इस तरह से डिज़ाइन करना चाहिए कि बच्चे को विभिन्न प्रकार के समृद्ध पाठ्यों के विभिन्न शब्दों में अक्षरों के कई संयोजन देखने को मिलें। इसलिए विविध प्रकार का अच्छा साहित्य सभी प्राथमिक कक्षाओं के लिए ज़रूरी है।



- अक्षरों का शिक्षण जल्दबाज़ी में नहीं करना चाहिए, शुरुआती कुछ महीनों में पूरे अनुक्रम को पढ़ाने पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए और बाद में शब्दों और वाक्यों को पढ़ना सिखाना चाहिए। स्कूली शिक्षा के शुरुआती वर्षों में लिपि को योजनाबद्ध और व्यवस्थित तरीक़े से पढ़ाना चाहिए।
- अक्षरों को पारम्परिक वर्णमाला क्रम में ही पढ़ाया जाना ज़रूरी नहीं है। उन्हें समूहों में विभाजित किया जा सकता है और फिर डीकोडेबल्स (decodables) या सिखाए गए अक्षरों का उपयोग करके सरल पाठ्य बनाए जा सकते हैं ताकि बच्चे उन शब्दों/वाक्यों को पहचानने, मिलाने और पढ़ने में सक्षम हो सकें भले ही वे सभी अक्षर उन्हें न पढ़ाए गए हों।

पायल की बुआ मायापुर में रहती हैं। एक दिन पायल उनके पास मायापुर गई। पायल बस से उतरी तो बुआ नहीं थी। पायल को लगा वे गुम हो गई हैं और वह रोने लगी। ऐसे में पायल को युगल मिल गया। युगल ने उससे कहा, रोओ मत, नीलम बुआ पास ही रहती हैं। अहा! युगल बुआ को जानता है, पायल हैरान रह गई।

पढ़ने के पाँच प्रमुख घटक

डीकोडेबल्स बच्चे को सार्थक सन्दर्भ और पढ़ने के अभ्यास के अवसर देते हैं, जिससे समझ के साथ प्रवाह को विकसित करने में मदद मिलती है। इसके अलावा अन्तर्राष्ट्रीय शोध से पता चलता है कि पाँच प्रमुख घटकों पर ध्यान केन्द्रित करने से बच्चों के पढ़ने में सुधार होता है। इसलिए पढ़ने की क्षमताओं को प्रभावी बनाने के लिए यह बात महत्त्वपूर्ण हो जाती है कि कक्षा-शिक्षण को इस प्रकार से डिज़ाइन किया जाए कि रोज़मर्रा के शिक्षण में, निम्नलिखित तत्वों पर ध्यान दिया जा सके।

1. *स्वर-विज्ञान सम्बन्धी जागरूकता (Phonological awareness)*

   स्वर-विज्ञान में किसी भी बोले गए शब्द की ध्वनि-संरचना के बारे में बताया जाता है, अर्थात यह समझना कि किताब शब्द में तीन ध्वनियाँ हैं /कि/ /ता/ और /ब/; महक की पहली ध्वनि /म/ है आदि।

2. *ध्वनि-विज्ञान (Phonics)*

   शब्दों को डीकोड करने के लिए ध्वनि-प्रतीक सम्बन्धों का उपयोग, अर्थात, यह समझना कि ध्वनि /क/ को 'क' के रूप में लिखा जाता है; जब हम /नी/ /ला/ ध्वनियों को जोड़ते हैं तो हमें एक शब्द मिलता है जिसे 'नीला' के रूप में लिखा जा सकता है।

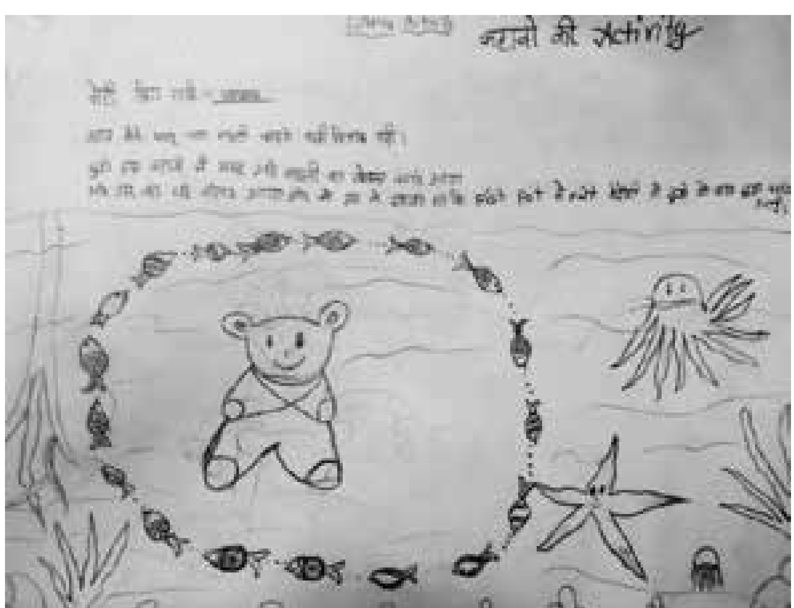
3. *शब्द-भण्डार*

   शब्द का उसके अर्थ के साथ ज्ञान। उदाहरण के लिए निम्नलिखित वाक्यों में लाल शब्द के अलग-अलग अर्थ हैं :

   यह कपड़ा लाल है।
   उसका चेहरा शर्म से लाल हो गया।
   माँ ने कहा "यह तो मेरा लाल है!"
   कोई शब्द सही मायने में किसी बच्चे के शब्द-भण्डार का हिस्सा तब बनता है जब वह कई सन्दर्भों में, स्वतंत्र रूप से उसका उपयोग कर सके।

4. *प्रवाह*

   अर्थात हाव-भाव के साथ जल्दी और सही तरीक़े से पढ़ने की क्षमता। उदाहरण के लिए 'कमला बाज़ार गई' है — इस वाक्य को एक बार में पढ़ना न कि इसे क, म, ला = कमला बा, ज़ा, र = बाज़ार – इस तरह से उसकी घटक ध्वनियों में तोड़कर या हिज्जे करके पढ़ना।



5. *बोध*

दिए गए पाठ्य के अर्थ के निर्माण के लिए उसे समझना; अर्थात, शब्दों के भीतर छिपी हुई बारीक़ियों, सम्भावित अलग-अलग अर्थों को समझना और पाठ से परे जाने में सक्षम होना।

इस बात को मानना होगा कि पढ़ना और लिखना एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। पढ़ने से लेखन में सुधार होता है जबकि लेखन करने से, जो पढ़ा गया है वह मज़बूत होता है। स्वतंत्र पाठक बनने के लिए बच्चों को स्वतंत्र लेखक भी बनना चाहिए। इसलिए कक्षा की गतिविधियों को इस तरह से डिज़ाइन किया जाना चाहिए कि बच्चों को पाठ्य पढ़ने और उसपर मौखिक एवं लिखित दोनों ही तरीक़ों से अपने विचार व्यक्त करने के अवसर मिलें, ताकि उनकी समझ को और मज़बूत किया जा सके और गहन बोध विकसित हो सके।

पढ़ने की गतिविधियाँ

पढ़ना सीखने की प्रक्रिया में बच्चों को सार्थकता और आनन्द देने के लिए यह ज़रूरी है कि उन्हें उपयुक्त बाल-साहित्य के सम्पर्क में लाया जाए और स्कूल, घर और समुदाय में पढ़ने की संस्कृति का विकास किया जाए। इसे सुनिश्चित करने के लिए स्कूल/कक्षा-पुस्तकालयों की स्थापना करनी चाहिए और पढ़ने से सम्बन्धित प्रभावी गतिविधियाँ करवाई जानी चाहिए। निम्नलिखित पठन-गतिविधियों को पुस्तकालयों/कक्षाओं में करवाया जा सकता है :

- ज़ोर से पढ़ना जिसमें शिक्षक कहानी पढ़ते हैं और कहानी को पढ़ने से पहले, कहानी पढ़ने के दौरान और कहानी पढ़ने के बाद की चर्चाओं में भाग लेने के लिए बच्चों को प्रोत्साहित करते हैं।
- साझा पठन जिसमें शिक्षक और बच्चे एक साथ बैठते हैं और एक पाठ्य पढ़ते हैं। इससे बच्चों को यह समझने में मदद मिलती है कि कुछ शब्द कैसे पढ़े जाते हैं और उन्हें अपेक्षित अभ्यास मिलता है।
- जोड़े में पठन जिसमें दो बच्चे जोड़े बनाकर पठन-अभ्यास में एक-दूसरे की मदद करते हैं।
- स्वतंत्र पठन जिसमें बच्चों को उनके पढ़ने के स्तर के अनुसार स्वतंत्र रूप से पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

'पढ़े भारत, बढ़े भारत' पर केन्द्र सरकार के हाल ही में दिए गए मार्गदर्शन में इस बात की सिफ़ारिश की गई है कि भाषा-शिक्षण के लिए प्रतिदिन 150 मिनट का समय दिया जाए। इसमें प्रथम एवं द्वितीय भाषा का शिक्षण तथा कम से कम 30 मिनट का स्वतंत्र पठन शामिल हो। स्वतंत्र पठन को केवल समय बिताने के शग़ल के रूप में नहीं लेना चाहिए, बल्कि इसे तो प्राथमिक कक्षाओं में एक अनिवार्य गतिविधि के रूप में देखना चाहिए।

रूम टू रीड का दीर्घकालिक विज़न यह है कि एक स्वतंत्र पाठक बनने में बच्चों की मदद की जाए और इस प्रकार उन्हें आजीवन सीखने के लिए सशक्त बनाया जाए, जो 2030 तक सभी के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के सतत विकास लक्ष्य (sustainable development goal) के अनुरूप है। अब समय आ गया है कि इसे प्राप्त करने के लिए हम प्रारम्भिक कक्षाओं के हस्तक्षेप के ऐसे प्रयासों पर अपना ध्यान केन्द्रित करें जो सुविज्ञ हों, भली-भाँति डिज़ाइन किए गए हों और विस्तारणीय होने के साथ-साथ टिकाऊ भी हों। इस बात के मद्देनज़र कि पढ़ना, अकादमिक शिक्षा की नींव है और पढ़ने के स्तर का कमज़ोर होना (low learning level), अधिगम के लिए अहितकर है, सार्वजनिक शिक्षा व्यवस्था के सामने इस बात को सुनिश्चित करने की चुनौती है कि बच्चे धाराप्रवाह रूप से और समझ के साथ पढ़ें।



सक्तिब्रता सेन रूम टू रीड इण्डिया के कार्यक्रम निदेशक हैं। वे इस संगठन में साक्षरता एवं बालिका शिक्षा कार्यक्रम तथा RM&E विभाग का नेतृत्व करते हैं। साक्षरता कार्यक्रम बच्चों में साक्षरता कौशल और पढ़ने की आदतें विकसित करता है। बालिका शिक्षा कार्यक्रम लड़कियों को माध्यमिक स्कूल की शिक्षा पूरी करने में मदद करता है और उनकी शिक्षा की वकालत के लिए सरकारी हितधारकों के साथ मिल कर काम करता है। सक्तिब्रता, बड़े पैमाने पर गुणवत्ता सुनिश्चित करने वाले कार्यक्रमों को डिज़ाइन करने में विशेषज्ञता रखते हैं। उन्हें भारतीय लिपियों और भाषाओं पर किए गए काम के लिए जाना जाता है। बच्चों के साहित्य को कक्षा में लाने में उनकी गहरी रुचि है। वे युवाओं के साथ और उनके हित के लिए काम करना पसन्द करते हैं। उनसे saktibrata.sen@roomtoread.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।



निधि विनायक रूम टू रीड इण्डिया के इंस्ट्रक्शन डिज़ाइन एण्ड टीचर सपोर्ट (IDTS) में सीनियर मैनेजर हैं। उन्होंने अर्थशास्त्र में डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की है और पिछले 15 वर्षों से शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रही हैं। उन्होंने प्रारम्भिक कक्षाओं में साक्षरता, शिक्षक-समर्थन प्रणाली और शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रमों की गुणवत्ता में बदलाव आदि विषयों पर सरकारी एजेंसियों और विभिन्न संगठनों के साथ परामर्शदाता के रूप में कार्य किया है। उन्होंने शिक्षक-शिक्षा सम्बन्धी अनेक कोर्स बनाए हैं और वे कक्षाओं में शोध-आधारित गुणवत्तापूर्ण हस्तक्षेप में रुचि रखती हैं। उनसे nidhi.vinayak@roomtoread.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** नलिनी रावल